Course -- M.A(Education),Part --1

Paper -- 3rd, Philosophical Foundation Of Eduration

Prepared by -- Dr Meena Kumari

Topic -- Educational Thought in vedic period

----------+---+++++----------+----------

वैदिक काल में शैक्षिक चिंतन

(1,)भारतीय संस्कृति का प्रारंभ हो चुका था ।प्राचीन भारतीय समाज एवं संस्कृति का स्वरूप वेदों में संरक्षित है। चार वेद सनातन संस्कृति के मूल आधार हैं ।वेदों में ज्ञान का अक्षय भंडार है जो मंत्रों में घुसा हुआ है। वैदिक मंत्रों की व्याख्या करने के लिए ही ब्राह्मण ग्रंथों की रचना की गई और उनका सही अर्थ जानने के लिए वेदों के छह अंग शिक्षा व्याकरण छंद निरुक्त ज्योतिष और कल जिसको वेदांग कहते हैं उसकी रचना हुई। वेद भारतीय विद्या तथा ज्ञान की सर्वाधिक मूल्यवान निधि है। भारतीय धर्म और संस्कृति का मूल स्रोत वेद है। यह कब लिखा गया इस संबंध में विद्वानों में मतभेद है लेकिन लोकमान्य तिलक ने इसे ऋग्वेद ईसा से 6000 वर्ष पूर्व से लेकर 4000 वर्ष पूर्व के बीच लिखा गया होगा ,ऐसा माना है। वेद अपौर्षय और अनादि है। जो अलौकिक ईश्वरीय ज्ञान ऋषियों ने अपनी अंतर प्रज्ञा द्वारा जाना उसे ही मंत्र रूप में रख दिया है ।हजारों वर्षों से वैदिक मंत्रों का स्वरूप इस देश में उसी प्रकार शुद्ध और अक्षुण्ण बना हुआ है ।वैदिक विद्वान ने वेद पाठ की परंपरा को जीवित रखते हुए अनेक शताब्दियों से ऐसी व्यवस्था की हुई थी कि एक गुरुकुल वेद को किसी एक भाग को शुद्ध रूप में कंथस्थ कर उसे अगली पीढ़ियों को निरंतर सौंपता जाए। इसका नाम शाखा दिया गया है तथा प्रत्येक अनुकूल या गोत्र के लिए कम से कम एक व्यक्ति किसी शाखा को कंठस्थ करने तथा उसकी परंपरा को जीवित रखने का दायित्व दिया गया है। कुछ वंशों ने दो वेदों का अध्ययन की तो द्विवेदी , 3 वेदों का अध्ययन कर त्रिवेदी और चार वेदों का अध्ययन कर चतुर्वेदी के उपाधि उसी परंपरा के
अनुसार प्राप्त की थी। अतः चार वेद प्रसिद्ध हुए हैं ऋग्वेद, सामवेद ,यजुर्वेद और अथर्ववेद। वेद ब्रह्म का मूर्त स्वरूप है । यह विदसतायाम, विदज्ञाने, विदविचारने तथा विदलाभे अर्थात सदैव सत्ता हो ,जो पूर्ण ज्ञान प्रद हो, जो विचारनिय तथा लाभप्रद हो ।

(2) वेदों की विशेषताएं --- वेदों की संख्या 4 है ऋग्वेद, सामवेद यजुर्वेद और अथर्ववेद। या माना जाता है कि ऋग्वेद सर्वाधिक प्राचीन है जिसमें ऋ अर्थ है छंद पध। इन्हीं छंदों या पद्धो को बांधकर सामवेद का उद्भव हुआ जिसका अर्थ है गीत ।इसके बाद यजु अर्थात गध में निबद्ध यजुर्वेद बना ।कहा जाता है कि सर्वप्रथम यह वेद संहिताबंदध हुए जिन्हें त्रयी कहा जाता है ।ऋग्वेद में देवताओं की स्तुति और सृष्टि विद्या है। यजुर्वेद का कर्मकांड और सामवेद में स्तुति गान ।वेद को त्रयी तथा श्रुति नाम से कहा जाता था। यह मत है कि श्रुति का तात्पर्य स्वानूभूत ज्ञान जो अंतः प्रज्ञा से सुना जाए। उस ज्ञान के आधार पर स्मरण करके उपज ज्ञान स्मृति कहा जाता है ।इस प्रकार श्रुति और स्मृति यह शब्द मौलिक ज्ञान और आधारित ज्ञान के भेद बताने के लिए है बाकी लेखन की परंपरा तो पहले से ही चल रही है।
वैदिक वांग्मय बड़ा विशाल है । पतंजलि के भाष्य में ऋग्वेद की 21शाखाएं, यजुर्वेद की 100 शाखाएं ,सामवेद की 1000 और अर्थ वेद की 9 शाखाएं थी । इसका उल्लेख मिलता है कि बहुत सारी शाखाएं विलुप्त भी हो चुकी है। वेदों के मंत्रों को आज हम जिस रूप में पाते हैं वह हजारों वर्षों से चली आ रही है। यह एक अत्यंत उल्लेखनीय और विश्व साहित्य में अनोखी बात है कि मंत्रों का पाठ तथा टेक्स्ट ज्यों का त्यों बना हुआ है इसमें थोड़ी भी परिवर्तन नहीं आ पाई है। वेद में

टेक्स्ट को बिना मुद्रण की सहायता के भी किस प्रकार अक्षुण्ण और अविकृत रखा जाए इसके लिए प्रत्येक मंत्र के शब्द को सीधा और उल्टा कंठस्थ करने तथा एक-एक शब्द को आगे पीछे करके याद करने की ऐसी प्रथाएं बनाई गई है जिसमें एक शब्द भी इधर-उधर नहीं हो सके। इस प्रकार के अभ्यास को आज भी विकृति पाठ कहते हैं। ऐसी व्यवस्था के कारण हीं परिवर्तन नहीं हो पाया है। इसीलिए विश्व के सभी विद्वानों का स्पष्ट मत है कि वेद भाषा की दृष्टि से अत्यंत प्रमाणिक और मान्य है।

वेदों के मंत्रों के विवेचन के लिए एक बहुत बड़ा साहित्य लिखा गया जिसे ब्राह्मण ग्रंथ कहते हैं ।इसके भी अनेक प्रकार है ब्राह्मण ,आरण्यक, दार्शनिक विवेचन ,उपनिषद तथा बौद्धिक चिंतन इत्यादि ।प्रत्येक वेद के अलग-अलग ब्राह्मण और उपनिषद है ,जैसे ऋग्वेद की येतरेय ब्राह्मण कोशतकी ब्राह्मण a इत्यादि ,यजुर्वेद का शतपथ ब्राह्मण ,तैतरीय ब्राह्मण, कठोपनिषद आदि , सामवेद का तानाडय , षडविंश ब्राह्मण और अर्थव वेद का गोपथ ब्राह्मण तथा मुण्डकोपिषद इत्यादि।

वेद में सभी प्रकार की ज्ञान की राशि निहित है ।अग्नि ,वायु ,सूरज आदि प्राकृतिक महा शक्तियों की स्स्तुतियां ,सृष्टि विद्या ज्योतिष ,शरीर विज्ञान ,सामाजिक कल्याण के अनुसार अनुष्ठानों के सिद्धांत, दार्शनिक चिंतन आदि सभी प्रकार का साहित्य वेदों में उपलब्ध है। प्रत्येक मंत्र विशेष देवता को लक्ष्य करके लिखा गया है।उसका उल्लेख जिसमें लिखा गया उसका उल्लेख का संपादन करके वेदव्यास ने वेदों को पृथक तथा अलग-अलग भागों में विभाजित किया था, ऐसा माना जाता है। इसके अनुसार वेद को 10 भागों में विभाजित किया गया है जिन्हें मंडल कहा जाता है। प्रत्येक मंडल में अनेक सूक्त है। ऋग्वेद में 1028 सूक्त तथा 10440से अधिक मंत्र है।

(१)ऋग्वेद -- इसका दूसरा नाम स्थापत्य वेद तथा अर्थ वेद भी है। महर्षि शाकलय ने इसका संहिताकरण किया था।ऋग्वेद संहिता दो तरह से विभाजित है मंडलों में तथा स्तनों में इसके 10 मंडल और 1028 सूक्त है। पचासी अनुवाक,64अध्याय, 2008 वर्ग है ।इसमें विभिन्न ज्ञान शाखाओं से संबद्ध सूक्त है जो 10 मंडलों में विभाजित है ।विभिन्न ऋषियों द्वारा विभिन्न देवताओं को संबोधित कर विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति की कामना करते हैं। ऋग्वेद में अलौकिक अभ्युदय का आशीर्वाद, कभी ज्ञान विज्ञान की जानकारी, विभिन्न शब्दों में निबंध सूक्त अपनी गरिमामय शैली में ज्ञान सामग्री का रहस्य बतलाते हैं।उसमें सृष्टिविज्ञन,प्राणविद्या ,सोमविधा,मधुविद्या , अनुशासन,तथा जीवन विज्ञान आदि अनेक विषय है।कुछ तो रूपकात्मक शैली में ऐसे रहस्मय ढंग से बतलाए गए हैं कि उनका अर्थ डिकोड करने पर हैं पता चलता है। इस धरती के बहुमूल्य पदार्थों का ,जन्म मृत्यु के रहस्य का ,ब्रहमांड के पिंडों का ,आत्मा का तथा अन्य सभी प्रकार के ज्ञातव्य पदार्थों का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। ये तथ्य इन बातों की पुष्टि करता है कि वेद में हमारी समग्र ज्ञान निधि के संकलन के रूप में सुरक्षित रखे गए हैं ।इनकी बहुत सी सामग्री आज अनुपलब्ध है ।लेकिन जो उपलब्ध है वह भी विविध दृष्टियों से संपादित और वर्गीकृत है ।इससे हम यह भी अनुमान कर सकते हैं कि हमारी ज्ञान संपदा की परंपरा बहुत ही पुरानी तथा व्यापक थी।

यदि वेद कालीन भारतीय समाज का एक मोटा खाका खींचा जाए तो यह स्पष्ट होता है कि उस समय हमारा समाज

ग्राम

प्रधान ,कृषि प्रधान तथा एक उच्च कोटि की,वैचारिक रूप से विकसित और सुशासित समुदाय थी। अर्थव वेद के काल तक आते-आते बड़े बड़े नगरों का असतित्व भी मिलता है। वेद और पुराण काल की तुलना करने पर यह मालूम होता है कि भारत में ऋग्वेद का समय जो समाज का था वह पर्याप्त रूप से प्रगतिशील, यथार्थवादी तथा उपयोगितावादी था ।वह पुराण काल तक आते-आते कट्टरवादी तथा दकियानूसी होता चला गया।

ऋग्वेद काल में नारियों को समाज में वही प्रतिष्ठा उपलब्ध थी जो पुरुषों को थी ।नारियां उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकती थी ।ऋग्वेद की रचनाओं की रचना करके ऋषि पद पर प्राप्त करने वाली महिलाएं घोषा, लोपामुद्रा, अपाला, रोमसा, सूर्या आदि अनेक विदुषियो का उल्लेख मिलता है।

(२)यजुर्वेद ---यजुर्वेद के दो भाग हैं कृष्ण यजुर्वेद तथा शुक्ल यजुर्वेद। यजु शब्द का अर्थ है यज्ञ। यजु गद्यबद्ध रिचा को भी कहा जाता है ।कृष्ण यजुर्वेद गध है तो शुक्ल यजुर्वेद में जो गध और पद जिसमें छंद मिले हुए हैं अर्थात शुक्ल यजुर्वेद में गधऔर पद मिले जुले होते हैं ।यजुर्वेद यज्ञ कर्मकांड से जुड़ा है जिसमें विभिन्न भागों का विधान है ।देव स्तुति है ,साथ में गणित ,विज्ञान शुभकामनाएं ,स्वास्तिवचन , शब्द कोष समाज में विविध कार्यकाल के शास्त्र इत्यादि। यजुर्वेद की 100 शाखाएं मानी जाती है। कृष्ण यजुर्वेद की तेतरीय, मत्रायनी और कंठ शाखाएं तथा शुक्ल यजुर्वेद की कानव और वाजसनेय है। कृष्ण यजुर्वेद में मंत्रों की संख्या 18000 बताई जाती है ।इसमें सात कांड है । शुक्ल यजुर्वेद के 40 अध्याय है जिनमें अंतिम अध्याय को ईशावास्योपनिषद कहा जाता है क्योंकि इसमें रहस्यवाद भी है। प्रत्येक वेद के उच्चारण की शैली अलग-अलग निर्धारित है ।ऋग्वेद की अनेक मंत्र कृष्ण यजुर्वेद में भी समाहित है। अतः दोनों की पाठशाला में समानता है।शुक्ल यजुर्वेद की शाली अलग है।अतः इस यजुर्वेद की पहचान कराने हेतु हाथों और उंगलियों का परिचालन भी सिखाया जाता है। यजुर्वेद के 40 अध्यायों में विभिन्न ज्ञान की शाखाएं संग्रहित है।यजुर्वेद मुख्यतया यज्ञ की विधियों में प्रयुक्त होता है।

)३)सामवेद -- यह वेद त्रई यी का अभिन्न अंग हैं। सामवेद का स्वरूप पध पर आधारित है।यह संगीत की अभिव्यक्ति है। इसकी 1000 शाखाएं थी। वर्तमान में सामवेद की सिर्फ तीन शाखाएं हिं मिलती है। सामवेद में कुल 1875 मंत्र मिलते हैं जो सभी ऋग्वेद में पाए गए हैं केवल 75 मंत्र ऐसे हैं जो केवल सामवेद में हैं अन्यत्र कहीं नहीं। सामवेद के अधिकांश मंत्र गायत्री और जगती छंदों पर है तथा ये दोनों गाने योग्य है। दोनों का अर्थ ऐसा है जो गाया जा सके। गायक जिस प्रकार से आलाप में आदि का उच्चारण करता है ,उसी प्रकार साम का उद् गाता भी उ , ह,वा शब्दों का उच्चारण करता है ।लगता है सोमरस बनाते समय या हर्ष के अवसरों पर देवों को प्रसन्न करने के लिए आनंद ,मंगल होकर आर्य लोग साम गान द्वारा सामूहिक संगीत की अवतारना करते होंगे। इस गायन शैली की अनेक प्रणालियां विकसित हुई ।छान्दोग्य में हींकार, प्रस्ताव, उदगीथ, प्रतिहार और निद्धान इन 5 अंगों का उल्लेख मिलता है ।ब्राह्मण ग्रंथों में उदगीत ,अनुगीत आगित का उल्लेख मिलता है ।इन्हीं से राग रागिनी यों का उद्भव और संगीत शास्त्र की उत्पत्ति हुई ऐसा माना जाता है।

४) अर्थव वेद -- चारों वेदों में अर्थव वेद को चौथा वेद माना जाता है ।शायद इसी कारण कुछ पाश्चात्य विद्वानों ने इसे बाद में रचा गया मान लिया और यह कहा गया कि यह शतपथ ब्राह्मण के बाद की रचना है क्योंकि इसमें तंत्र और मंत्र विद्या वर्णित है ।इन विद्वानों का यह मान्यता है कि अर्थव शब्द ईरान के अर्थवन शब्द से निकला है। यह बात तो सच है कि अर्थव वेद में मंत्र विद्या है ।तंत्र की अनेक प्रयोग है। अभीचार हैं ,परंपरावादी विद्वानों के प्रयोग भी वर्णित है। इसे तत्कालीन तकनीकी ज्ञान का संकलन भी कहा जा सकता है। इस दृष्टि से चारों वेदों के बीच अनूठा महत्व है। यह माना जाता है कि अर्थवा नामक ऋषि ने इन विद्याओं का साक्षात्कार किया इसलिए इसका नाम अर्थव वेद पड़ा।इस वेद के अभिलेख स्वरूप में इसको पहले अर्थवागिरीश वेद भी कहा जाता था ।जिन मंत्रों में, तंत्र विद्या, मंत्र विद्या आदि विद्या बतलाई गई है तथा साक्षात मंत्र है और मारण, उच्चाटन आदि अभिचार प्रयोगों की विधाएं आंग्रसनों ने बताए हैं।यह वेद 29 कांडों में विभक्त है ।यह 29 कांड 48 प्रपठकों में विभक्त है।अर्थव वेद में 769 सूक्त है और लगभग 6000 मंत्र हैं।

(3) वेद और शिक्षा --- भारतीय इतिहास में लगभग 1500 ई पू पूर्व से 500 ईसवी पूर्व तक के काल को वैदिक काल के नाम से जाना जाता है। यह समय वेदों की रचना तथा वेदों पर आधारित शिक्षा व्यवस्था का समय है इस समय में अंतिम वर्षों में ब्राह्मण अरण्यक ,उपनिषद् आदि ग्रंथों की रचना और वेदों के भाग के रूप में हुई थी। इसलिए प्राचीन भारतीय शिक्षा का उदय वेदों से माना जाता है वेद विश्व साहित्य के प्राचीनतम तथा धरम ग्रन्थ है। वैदिक समय को दो भागों में बांटा जा सकता है पूर्व वैदिक काल तथा उत्तर वैदिक काल।

पूर्व वैदिक काल का समय 1500 वर्ष ई पूर्व से 1000 ई. पू.तक माना जाता है और इस समय ऋग्वेद की रचना हुई थी। उत्तर वैदिक काल ,यजुर्वेद ,सामवेद,अर्थव वेद तथा वेदांग की रचना हुई थी ।इसका समय 1000 ई. पू.से 500 ई. पू. तक माना जाता है।वेदकालीन शिक्षा विशेषताओ मे उपनयन संस्कार ,शिक्षा के उद्देश्य में मोक्ष की प्राप्ति तथा आत्मा की पवित्रता पर विश्वास करना इत्यादि है ।शिक्षण संस्थान तथा ब्रह्मचारी रहना और गुरु शिष्य संबंध पिता-पुत्र की तरह था ।नारी को भी वैदिक काल में विद्या अध्ययन का पूर्ण अधिकार था। सामान्य जीवन में प्रवेश से पहले तक लड़कियां अध्ययन करती थी, गार्गी ,लोपमुर्दा , अपाला आदि काल में नारी शिक्षा का उत्तम स्वरूप प्रस्तुत की थी। शिक्षा के विधि में मौखिक प्रश्न उत्तर, व्याख्यान ,वाद विवाद आदि विधियों का प्रयोग किया जाता था ।तप तथा श्रुति ज्ञान प्राप्त करने की दो प्रमुख विधियां थी ।परीक्षा प्रणाली में विद्वानों की सभा राजदरबार में आयोजित की जाती थी तथा शास्त्रार्थ के द्वारा ज्ञान को प्रमाणित करना पड़ता था।शिक्षा समाप्त होने के बाद समावर्तन।उपदेश दिया जाता था ।वस्तुत यह ब्रह्मचर्य आश्रम का अंतिम संस्कार होता था जिसके उपरांत वे विवाह संस्कार में जाते थे तथा शिक्षा की समाप्ति पर गुरु समावर्तन उपदेश के रूप में छात्रों को उपदेश देते थे जिसमें सत्य बोलने ,कर्तव्य पालन तथा वेद अध्ययन करने पर विशेष बल दिया जाता था ।वैदिक काल में शिक्षा के केंद्र एक ही व्यक्ति अर्थात गुरु तक केंद्रित थी। शिक्षा में व्यय अत्यंत कम थी। शिष्यों द्वारा लाई गई भिक्षा, गुरु दक्षिणा, दान, उपहार ,पशुपालन और राजकीय सहायता से शिक्षा की व्यवस्था की जाती थी। शिक्षा विभाग के 6 अंग वर्ण, स्वर ,मात्रा ,बल,साम और संतान जिनसे उच्चारण सिखाया जाता था। उच्चारण का बहुत महत्व था ।याज्ञवल्क्य को शुक्ल यजुर्वेद का दृश्टा ,प्रवक्ता आदि कहा गया है, जबकि संहिता में किसी भी मंत्र के द्रष्टा के रूप में किसी का नाम नहीं मिलता। वेदों की पारंपरिक मान्यता के अनुसार यजुर्वेद से संबंध शिक्षाएं बहुत अधिक है जिसमें कुछ मुख्य शिक्षा वशिष्ठ, कात्यायनी, मांडव ,अमोघ ,नंदिनी ,अमरेश ,यशवी, अवसान, स्वशक्ति, तथा पाणिनीय शिक्षा इत्यादि । अतः शिक्षक वाचिक परंपरा का अंग है जो गुरुद्वारा शिष्यों को वेद का उच्चारण, संधारण आदि करना सिखाने के रूप में चली आ रही है ।इसके जो ग्रंथ उपलब्ध है या उनसे इसके स्वरूप का ध्यान भी हो सकता है ।इससे गुरु विविध प्रकार से उच्चारण सिखाते थे।संपूर्ण वैदिक वांग्मय का अध्ययन कर उसकी कुंजी बताने हेतु भी उस समय एक निष्पक्ष समीक्षक की बात की जाती है। इस तरह वेद में शिक्षा का स्थान बहुत ऊंचा है ।उस समय के शैक्षिक परंपरा का यह प्रभाव है कि मौखिक रूप में होते हुए भी यह आज तक अपने मूल स्वरूप में उपलब्ध है।